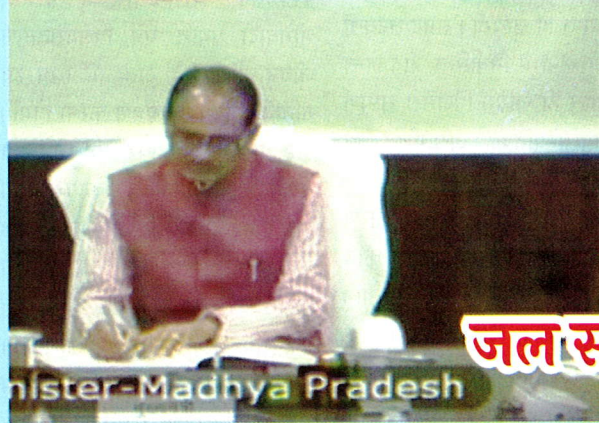


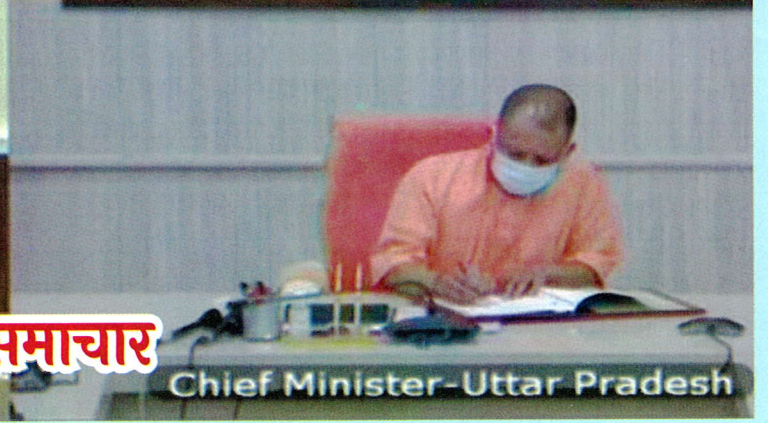
Prime Minister



Dr. Ambedkar International Centre



Minister-Madhya Pradesh



Chief Minister-Uttar Pradesh

पवन कुमार

जल समाचार

जहां भी गिरे, जब भी गिरे, सहेज लें बारिश की हर बूंद

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने 'जल शक्ति अभियान: कैच द रेन' यानी वर्षा जल संचयन अभियान की शुरुआत की है। विश्व जल दिवस 22 मार्च 2021 से लेकर 30 नवंबर 2021 तक चलने वाले इस अभियान में बारिश के पानी को सहेजने के लिए बड़े पैमाने पर कार्यक्रम आयोजित होंगे तथा अब केन-बेतवा नदी जोड़ी परियोजना भी मूर्तरूप लेगी।

प्रधानमंत्री कार्यालय की ओर से जारी सूचना के अनुसार, वीडियो कांफ्रेंस के जरिये आयोजित होने वाले समारोह में पीएम की उपस्थिति में केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत और मध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्रियों के बीच केन-बेतवा परियोजना क्रियान्वित करने संबंधी समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।

नदियों को जोड़ने की राष्ट्रीय योजना के तहत यह पहली परियोजना होगी। पीएमओ के मुताबिक 'जल शक्ति अभियान: कैच द रेन' कार्यक्रम के तहत वर्षा जल संचयन अभियान देश भर में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में चलाया जाएगा। इसका नारा होगा जहां भी गिरे और जब भी गिरे, वर्षा का पानी जमा करें। इस अभियान को गांव-गांव में जन आंदोलन के रूप में चलाया जाएगा ताकि बारिश के पानी का संचयन सुनिश्चित हो और भूजल स्तर की स्थिति बेहतर हो।

प्रधानमंत्री द्वारा अभियान की शुरुआत करने के बाद सभी राज्यों के सभी जिलों की ग्राम पंचायतों की सभी ग्राम सभाओं की बैठक होगी और वर्षा जल संचयन के बारे में चर्चा होगी। ग्राम सभाओं की ओर से जल शपथ कार्यक्रम का भी आयोजन किया जाएगा।

कैसे चलाया जाएगा अभियान

1. अभियान के तहत सरकारों, संस्थाओं और समाज को चेक डैम, वाटर हार्वेस्टिंग पिट्स, रूफटाप वर्षा जल संग्रहण प्रणाली लगाने, तालाबों सहित तमाम जलस्रोतों के अतिक्रमण हटाने और उनकी स्थिति दुरुस्त करने का काम होगा ताकि ज्यादा मात्रा में और अधिक समय तक जल संग्रह हो सके। इन जल स्रोतों तक उनके कैचमेंट एरिया से बारिश का पानी लाने वाले चैनलों की राह से बाधाएं हटाई जाएंगी। खराब पड़े बोरवैल्स और सूख चुके कुओं को दुरुस्त किया जाएगा ताकि इनके जरिये बारिश का पानी धरती की कोख में भेजा जा सके।
2. अभियान से जुड़ी तमाम गतिविधियों में मदद देने के लिए सभी राज्यों के प्रत्येक जिले में रेन सेंटर्स स्थापित किए जाएंगे। इन रेन सेंटर्स का मोबाइल नंबर लोगों से साझा किया जाएगा। हर सेंटर पर वर्षा जल संग्रहण प्रणाली का एक विशेषज्ञ होगा जो लोगों को तकनीकी जानकारी देगा।
3. सभी शहरों के सभी भवनों की छतों पर आरडब्ल्यूएच (वर्षा जल संग्रहण प्रणाली) स्थापित की जाएगी। इससे शहरी क्षेत्रों का भूजल स्तर बढ़ेगा और सड़कों पर जलभराव की समस्या से छुटकारा मिलेगा।
4. हर जिले में सभी तालाबों से अतिक्रमण हटवाया जाएगा। तालाबों को रेवेन्यू रिकार्ड से चिन्हित किया जाएगा।
5. सभी जिलाधिकारियों आईआईएम, आईआईटी, केंद्रीय विश्वविद्यालयों, निजी विश्वविद्यालयों, रेलवे चैयरमैन, एयरपोर्ट अथॉरिटी, सार्वजनिक उपक्रमों, सेंट्रल आर्म्ड फोर्स के डी.जी. की इस अभियान

में मदद ली जाएगी। इन अधिकारियों, संस्थाओं के अधीन बहुत सी खाली या बसावट वाली जमीनें हैं। अभियान को सफल बनाने के लिए इनकी सक्रिय भागीदारी जरूरी होगी।

छात्राओं को जल संरक्षण के प्रति किया जागरूक

जल के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। धरती पर जल लगातार कम हो रहा है हम अगर समय रहते संरक्षण का प्रयास नहीं करते हैं तो भविष्य में गंभीर परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं।

सरस्वती राजकीय बालिका इंटर कालेज झबरेड़ा में आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत जल संरक्षण पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हाईड्रोलॉजी (एनआईएच) रूड़की के वैज्ञानिकों ने छात्राओं को जल संरक्षण के लिए प्रेरित किया। वैज्ञानिक डॉ. सुरजीत सिंह, डॉ. गोपाल कृष्ण व प्रधान शोध सहायक अंजू चौधरी ने कहा कि जल संरक्षण प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। भू-जल का अंधाधुंध दोहन होने से दिन-प्रतिदिन जल संकट बढ़ रहा है। भू-जल स्तर कम होने से नलकूपों से निकलने वाले पानी की मात्रा कम होती जा रही है। जहां पर पानी की कमी है वहां पर बारिश के पानी को संरक्षित किया जाता है। देश में अधिक फैक्ट्रियों के लग जाने से जल प्रदूषित भी हो रहा है जो एक

चिंता का विषय है। इस अवसर पर प्रधानाचार्य पूनम शर्मा, रचना, पूजा, ज्योति, पूनम आदि उपस्थित रहे।

एनआईएच ने की तालाब की सफाई

एनआईएच रूड़की ने स्वच्छता पखवाड़ा के तहत भगवानपुर के मसाही कलां में तालाब की सफाई व स्वच्छता और जन जागरूकता अभियान चलाया। इस दौरान उपस्थित नागरिकों को स्वच्छता की शपथ भी दिलाई गई।

मसाही कलां में कार्यक्रम का शुभारंभ एडीएम वित्त के.के. मिश्रा और जिला पंचायत के पूर्व अध्यक्ष जय भगवान सैनी ने किया। इस दौरान उन्होंने गांवों में होने वाले स्वच्छता कार्यक्रमों एवं तालाबों से संबंधित कार्यों की जानकारी ली। श्री के.के. मिश्रा ने राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान द्वारा किये जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि तालाबों को स्वच्छ रखना हम सबकी जिम्मेदारी है। संस्थान के कार्यकारी निदेशक डॉ. सुधीर कुमार ने उपस्थित नागरिकों को जल और स्वच्छता के महत्व के बारे में बताया। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ओमकार सिंह ने इब्राहिमपुर मसाही स्थित दो तालाबों पर किए जा रहे अध्ययनों व गंदे पानी को शुद्ध करने के लिए प्राकृतिक उपचार तंत्र की जानकारी दी।

स्वच्छ भारत मिशन के नोडल अधिकारी व वैज्ञानिक डॉ. एल.एन. ठकुराल ने स्वच्छता व पर्यावरण के

महत्व के बारे में जागरूक किया। उन्होंने बताया कि आजादी का अमृत महोत्सव का भी शुभारंभ किया गया। इस मौके पर वैज्ञानिक दीपा चालीसगावकर, डॉ. आरपी पांडेय, डॉ. सुरजीत सिंह, दिगंबर सिंह मौजूद रहे।

कि जल संरक्षण जागरूकता के अभाव में हम जल को बरबाद कर रहे हैं। राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान रूड़की के निदेशक डॉ. जयवीर त्यागी ने कहा कि स्वच्छता शक्ति के समान है, हमें अपने आस-पास स्वच्छता रखनी चाहिए एवं



राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान द्वारा इब्राहिमपुर मसाही कलां में तालाब की सफाई पर्यावरण के लिए हानिकारक है प्लास्टिक का उपयोग नहीं करना चाहिए तभी हम पर्यावरण की रक्षा कर सकते हैं।

प्लास्टिक का उपयोग कम से कम करें। क्योंकि यह मानव जीवन के साथ ही पर्यावरण के लिए भी बहुत हानिकारक है। राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान (एनआईएच) रूड़की में स्वच्छता और जल संरक्षण विषय पर 24 मार्च 2021 को आयोजित जागरूकता कार्यक्रम में वक्ताओं ने यह विचार व्यक्त किए। इस दौरान संस्थान के स्वच्छ भारत मिशन के नोडल अधिकारी डॉ. एलएन ठकुराल ने सभी को स्वच्छता की शपथ दिलाई।

इस मौके पर मुख्य अतिथि नगर आयुक्त नूपुर वर्मा ने कहा कि नगर निगम ने अपनी पुरानी परंपराओं को बरकरार रखा है। निगम कार्यालय में कुल्हड़ और मिट्टी के सामान का उपयोग किया जा रहा है। मुख्य शिक्षा अधिकारी डॉ. आनंद भारद्वाज ने कहा

इस अवसर पर रेखा त्यागी, डॉ. संगीता अग्रवाल, अमिता गुप्ता, सुमन गुर्जर, अचलेश अग्रवाल, हेमलता चौधरी, दीपा चालीसगावकर, ओमकार सिंह, अर्चना सरकार, फुरकान उल्लाह, दीपक, रजनीश, किरण आदि मौजूद रहे।

विभिन्न स्थानों पर रोपें पौधे

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान रूड़की की ओर से स्वच्छता पखवाड़े 2021 के तहत विभिन्न स्थानों पर पौधे रोपित किए गए। नहर किनारे स्थित गंगोत्री वाटिका, सोलानीपुरम और अरोड़ा कॉलोनी में फल और औषधीय पौधे लगाए गए। इस मौके पर संस्थान के निदेशक डॉ. जयवीर त्यागी, संस्थान में स्वच्छ भारत मिशन के नोडल अधिकारी डॉ. एलएन ठकुराल, सिंचाई विभाग के सुपरिटेण्डेंट इंजीनियर नवीन सिंघल, डॉ. ए.के.





राजसं द्वारा “पर्यावरण के लिए हानिकारक है प्लास्टिक” विषय पर महिलाओं के लिए आयोजित कार्यशाला

लोहनी, सुनील साहनी, पवन कुमार आदि उपस्थित रहे।

स्वच्छ जल तक पहुंच देश के लिए चुनौती

आईआईटी रुड़की ने राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान के सहयोग से 22 मार्च 2021 को विश्व जल दिवस मनाया। कार्यक्रम का आयोजन आईआईटी रुड़की के हाइड्रो एंड रिन्यूएबल एनर्जी विभाग ने हाइब्रिड मोड में किया। जिसमें संस्थान के फैकल्टी और एनआईएच के वैज्ञानिकों समेत 40 ऑफलाइन प्रतिभागियों की मौजूदगी रही। वैल्यूइंग वाटर थीम पर आयोजित इस कार्यक्रम में, एचआरआईडी विभाग के कीर्ति गोयल और अरूण कुमार द्वारा लिखित “वॉटर रियूज-ए वाइटल स्टेप टू वाटर्स वॉटर वैल्यू” नामक एचआरआईडी पब्लिकेशन का भी विमोचन हुआ। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण पानी के उचित उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए सस्टेनेबल कैचमेंट मैनेजमेंट पर यू.के. सेंटर फॉर इकोलॉजी एंड हाइड्रोलॉजी के वॉटर रिसोर्स हेड डॉ. ग्वेन रीस द्वारा दिया गया संबोधन था। उन्होंने कहा सस्टेनेबल वॉटर ट्रीटमेंट सार्वजनिक जल आपूर्ति के लिए वॉटर ट्रीटमेंट कॉस्ट को कम करने, प्रदूषण कम करने, पानी की उपयोगिता बढ़ाने और जैव विविधता की रक्षा में कई गुना प्रभाव डालता है। इन सभी परिणामों का प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण संतुलन बनाए रखने और नेचुरल कैपिटल अकार्टिंग में आर्थिक और सामाजिक लाभ हैं। आईआईटी रुड़की के निदेशक प्रो. ए.के. चतुर्वेदी ने कहा पानी

हमारे लिए एक अनिवार्य संसाधन है, स्वच्छ जल तक पहुंच का अभाव भारत के लिए एक विकट चुनौती है। पानी का समुचित प्रबंधन पर्यावरणीय स्थिरता के लिए अत्यावश्यक है। डॉ. सुधीर कुमार ने जलविज्ञान और जल के क्षेत्रों में एनआईएच के योगदान को विस्तार से बताया। प्रो. एम.के. जैन, जल संसाधन विकास और प्रबंधन के प्रमुख प्रो. आशीष पांडे, आईआईटी रुड़की के डिजाइन इनोवेशन सेंटर के प्रो. एस.के. सिंघल ने जल से संबंधित अनुसंधान और विकास गतिविधियों की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन प्रो. एस.के. सिंगल, प्रो. सोनल के. थेंगाने ने किया।

आत्म निर्भर भारत हेतु जल संरक्षण एवं जल प्रबंधन की वैज्ञानिक तकनीकें

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की के जलविज्ञानीय अन्वेषण प्रभाग द्वारा “आजादी का अमृत महोत्सव अभियान” के अंतर्गत “आत्मनिर्भर भारत हेतु जल संरक्षण एवं जल प्रबंधन की वैज्ञानिक तकनीकें” विषय पर दिनांक 28 मई, 2021 को एक दिवसीय ई-संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उत्तराखंड, हिमाचल तथा जम्मू एवं कश्मीर से 27 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। गोष्ठी का उद्देश्य जल संरक्षण एवं प्रबंधन हेतु उपलब्ध तकनीकों को आम आदमी तक पहुंचाना था। गोष्ठी के प्रारम्भ में प्रभाग के वैज्ञानिक डॉ. संतोष पिंगले ने आजादी की 75वीं वर्षगांठ पर भारत सरकार द्वारा आयोजित “आजादी का अमृत

महोत्सव” अभियान पर प्रकाश डाला और बताया कि इस अभियान का मुख्य उद्देश्य भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए चेतना पैदा करना है। उन्होंने यह भी कहा कि जल संरक्षण एवं प्रबंधन के क्षेत्र में संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों को लैब से लैंड तक पहुंचाना जरूरी है ताकि आम आदमी को इसका समुचित लाभ मिल सके।

गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए प्रभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सुहास खोब्रागड़े ने प्रभाग द्वारा जल संरक्षण एवं प्रबंधन के क्षेत्र में किये जा रहे विभिन्न कार्यों तथा इनमें प्रयोग की जा रही तकनीकों एवं विधियों के बारे में संक्षिप्त रूप से बताया। डॉ. सुहास खोब्रागड़े ने झीलों के संरक्षण एवं प्रबंधन पर प्रभाग द्वारा किये जा रहे कार्यों पर विशेष चर्चा की। उन्होंने झीलों में लगातार घटते हुए जलस्तर और बढ़ते हुए प्रदूषण के विभिन्न संभावित कारणों पर प्रकाश डाला और इनके वैज्ञानिक समाधान पर चर्चा की। इस अवसर पर प्रभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एम.एस. राव ने “जल शोध एवं प्रबंधन में समस्थानिक (Isotope) तकनीकी के उपयोग पर अपने विचार रखे। उन्होंने बताया कि आइसोटोप तकनीक का उपयोग कर हिमालयी जल स्रोतों के पुनर्भरण क्षेत्र का चिन्हीकरण किया जा सकता है ताकि जल संरक्षण के अभियांत्रिकी उपायों को सही स्थान पर लागू किया जा सके। उन्होंने भूमिगत जल के स्वच्छ स्रोतों का पता लगाने में आइसोटोप तकनीक किस तरह से कारगर है इसको विस्तृत रूप से समझाया। प्रभाग के वैज्ञानिक डॉ. सोबन सिंह रावत ने संस्थान द्वारा हिमालयी जल स्रोतों पर विकसित सूचना प्रणाली के बारे में बताया तथा यह भी बताया कि किस प्रकार से सूखने वाले जल स्रोतों को चिन्हित कर उन्हें पुनर्जीवित किया जा सकता है।

इस अवसर पर डॉ. संतोष पिंगले ने “जल एवं मृदा संरक्षण में भू-स्थानिक तकनीकों की भूमिका” विषय पर अपने विचार रखे। उन्होंने बताया कि आज हमारे देश ने भू-स्थानिक क्षेत्र में काफी विकास कर लिया है और हमारे पास बहुत हाई रेसोल्यूशन (resolution) उपग्रह उपलब्ध हैं जिनसे खींची हुई तस्वीर से विभिन्न क्षेत्रों में जल की उपलब्धता का सटीक आंकलन किया जा सकता है। संगोष्ठी में उपस्थित विभिन्न प्रतिभागियों ने यह महसूस किया कि जल आंदोलन को जन आंदोलन बनाने की जरूरत है ताकि जल संरक्षण एवं जल प्रबंधन में

वैज्ञानिक तकनीकों को वृहत स्तर पर प्रयोग किया जा सके। इस अवसर पर महिला प्रतिभागियों ने भी जल संरक्षण एवं प्रबंधन पर अपने विचार रखे।

अंत में प्रभाग के वैज्ञानिक डॉ. सोबन सिंह रावत ने सभी प्रतिभागियों का ई संगोष्ठी में प्रतिभाग करने एवं अपने विचार रखने के लिए आभार प्रकट किया।

स्कूली बच्चों के लिए सूचना, शिक्षा और संचार (आईईसी) गतिविधि

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की के जलविज्ञानीय अन्वेषण प्रभाग द्वारा “आजादी का अमृत महोत्सव” अभियान के अंतर्गत “जल संरक्षण एवं जल सुरक्षा (Water Conservation and Water Security)” विषय पर दिनांक 05 जुलाई, 2021 को स्कूली बच्चों के लिए सूचना, शिक्षा और संचार (आईईसी) गतिविधि (Information, Education and Communication (IEC) Activity for School Children's) का आयोजन जलविहार कॉलोनी रुड़की में किया गया। इस अवसर पर जलविहार कॉलोनी में रहने वाले विभिन्न स्कूलों के 20 बच्चों ने प्रतिभाग किया। इस गतिविधि का उद्देश्य जल संरक्षण एवं जल सुरक्षा हेतु उपलब्ध तकनीकों की जानकारी को स्कूली बच्चों तक पहुंचाना था।

गतिविधि के प्रारम्भ में प्रभाग के वैज्ञानिक डॉ. सोबन सिंह रावत ने आजादी की 75वीं वर्षगांठ पर भारत सरकार द्वारा आयोजित “आजादी का अमृत महोत्सव” अभियान पर प्रकाश डाला और बताया कि इस अभियान का मुख्य उद्देश्य भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए जन चेतना पैदा करना है। उन्होंने यह भी कहा कि जल संरक्षण एवं प्रबंधन के क्षेत्र में संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों को लैब से लैंड तक पहुंचाना जरूरी है ताकि आम आदमी को इसका समुचित लाभ मिल सके।

इस अवसर पर बच्चों के लिए संस्थान द्वारा निर्मित और जलविहार कॉलोनी में स्थित अपशिष्ट जल उपचार संयंत्र (Waste Water Treatment Plant) का प्रदर्शन किया गया। जिसमें संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. राजेश सिंह ने विशेष मार्गदर्शन किया तथा संयंत्र की कार्यप्रणाली के बारे में विस्तार से समझाया। अपने मार्गदर्शन में उन्होंने परियोजना के माध्यम से जल संरक्षण कैसे किया जा सकता है इसके बारे में विस्तार से समझाया। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि कैसे ये संयंत्र अपशिष्ट प्रबंधन की समस्या

को हल करता है और आसपास के वातावरण को स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त रख सकता है। उन्होंने अपशिष्ट जल को शुद्ध करने में विभिन्न वनस्पतियों/ पौधों की भूमिका को भी अच्छी तरह से समझाया। इस अवसर पर बच्चों ने उनकी बातों से प्रेरित होकर इस परियोजना के साथ-साथ मृदा एवं जल संरक्षण पर कई शंकाएं भी पूछी और वे उनके उत्तरों से संतुष्ट एवं प्रभावित हुए।

इस अवसर पर प्रभाग के वैज्ञानिक डॉ. संतोष पिंगले ने बच्चों को देश में जल सुरक्षा एवं खाद्य सुरक्षा प्राप्त करने के बारे में बताया। उन्होंने आगे बताया कि बदलती जलवायु, जनसंख्या वृद्धि एवं शहरीकरण आदि से मानव जीवन एवं पारिस्थितिकी तंत्र पर कई प्रभाव पड़ते हैं, जिससे देश में पानी एवं खाद्य सुरक्षा की समस्या होती है। मृदा एवं जल संरक्षण समय की आवश्यकता है, जिससे जल एवं खाद्य सुरक्षा प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने कहा कि बच्चे हमारे राष्ट्र का भविष्य हैं। इस कार्य को भविष्य में बच्चों को ही करना है।

अंत में डॉ. संतोष पिंगले ने सभी प्रतिभागियों का आईईसी गतिविधि में प्रतिभाग करने एवं अपने विचार रखने के लिए आभार प्रकट किया।

हिंदी तकनीकी पुस्तक लेखन पुरस्कार योजना-वर्ष 2020 एवं 2021

जल शक्ति मंत्रालय, जल संसाधन नदी विकास तथा गंगा संरक्षण विभाग, भारत सरकार के दिशा-निर्देशों के अनुसरण में राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की द्वारा हिंदी में तकनीकी पुस्तक लेखन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से “राष्ट्रीय जल जागरूकता पुरस्कार योजना प्रारंभ की गई है। इस पुरस्कार योजना के अंतर्गत दिनांक 01.01.2020 से 31.12.2021 के दौरान प्रकाशित तकनीकी पुस्तकें आमंत्रित की जानी हैं। इस योजना के तहत पुस्तकों को निम्नानुसार दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है:-

प्रथम श्रेणी : मौलिक रूप से हिंदी में प्रकाशित तकनीकी पुस्तकें

द्वितीय श्रेणी : हिंदी में प्रकाशित अनूदित तकनीकी पुस्तकें

पुरस्कार योजना हेतु स्वीकार्य पुस्तकों के विषय:

(क) जलविज्ञान

(ख) जलवायु परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में जल

(ग) जल के क्षेत्र में आधुनिक तकनीकों का

प्रयोग

(घ) कृषि, वन, पर्यावरण के क्षेत्र में जल की भूमिका

पुरस्कार राशि

(प्रथम श्रेणी के अंतर्गत)

प्रथम : रु. 50,000/- एवं स्मृति चिन्ह

द्वितीय : रु. 30,000/- एवं स्मृति चिन्ह

तृतीय : रु. 20,000/- एवं स्मृति चिन्ह

(द्वितीय श्रेणी के अंतर्गत)

प्रथम : रु. 50,000/- एवं स्मृति चिन्ह

द्वितीय : रु. 30,000/- एवं स्मृति चिन्ह

तृतीय : रु. 20,000/- एवं स्मृति चिन्ह

पात्रता एवं सामान्य शर्तें

- (1) भारत का कोई भी नागरिक इस पुरस्कार योजना में भाग ले सकता है।
- (2) एक लेखक एक से अधिक प्रविष्टियां भी भेज सकता है। पुस्तक में एक से अधिक लेखक होने की स्थिति में पुरस्कार राशि प्रथम लेखक को प्रदान की जाएगी। सह-लेखकों को पुरस्कार राशि के वितरण की जिम्मेवारी समिति की न होकर प्रथम लेखक की होगी।
- (3) किसी भी सरकारी संगठन द्वारा पूर्व में पुरस्कृत पुस्तकें पात्र नहीं होंगी।
- (4) उपर्युक्त विषयक योजना के अंतर्गत पुरस्कारों की घोषणा से पहले यदि पुस्तक को अन्य किसी पुरस्कार योजना के अंतर्गत पुरस्कृत किया जाता है तो इसकी सूचना लेखक द्वारा तत्काल राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की को दी जाए।
- (5) योजना के अंतर्गत कलैन्डर वर्ष के दौरान प्रकाशित पुस्तकें ही स्वीकार्य हैं। पुस्तक का विषय किसी पी.एच.डी. शोध के लिए शामिल न किया गया हो।
- (6) लेखक पुस्तक में दिए गए आंकड़ों एवं तथ्यों के लिए स्वयं उत्तरदायी होंगे और उनके प्रमाण में जहां तक संभव हो, संदर्भ देंगे।
- (7) पुस्तक कम से कम 100 पृष्ठ (कम से कम 50 हजार शब्द) की होनी चाहिए। इसमें फोटोग्राफ एवं संदर्भों के पृष्ठ शामिल नहीं होंगे।
- (8) पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार प्राप्त करने के लिए आमंत्रित करने पर केवल तृतीय श्रेणी

(वातानुकूलित) (3 ए.सी.) का रेल किराया दिया जाएगा।

- (9) पुरस्कृत लेखक तीन वर्षों के उपरांत ही इस योजना में पुनः भाग ले सकते हैं।
- (10) यह सुनिश्चित किया जाए कि कोई भी पुस्तक किसी अन्य पुस्तक/लेखों आदि से अनूदित, इनसे नकल की गई नहीं होनी चाहिए। यदि ऐसा पाया गया तो पुस्तक स्वीकार नहीं की जाएगी और यदि पुरस्कार देने के बाद ऐसा पाया गया तो संस्थान को पूरा अधिकार होगा कि वह पुरस्कार की धनराशि लेखक से वापिस ले। ऐसे विवाद में संस्थान को पूरा अधिकार होगा कि वह पुरस्कार की धनराशि लेखक से वापिस ले। ऐसे विवाद का न्यायिक निपटान रुड़की क्षेत्र में होगा।
- (11) ऐसी पुस्तकें जो किसी पाठ्यक्रम के लिए या किसी भी सरकारी विभाग/एजेंसी से प्राप्त अनुदान/सहायता से लिखी/प्रकाशित की गई हों, उन्हें स्वीकार नहीं किया जाएगा।
- (12) यदि मूल्यांकन समिति इस निष्कर्ष पर पहुंचती है कि प्रविष्टियों में से कोई भी पुस्तक किसी भी पुरस्कार के योग्य नहीं है तो इस संबंध में उसका निर्णय अंतिम माना जाएगा।

प्रविष्टियां भेजने की विधि

- (i) प्रविष्टियां संलग्नक-क में दिए गए प्रपत्र (अनिवार्यतः पूरे भरे हुए) के साथ भेजी जाएं अन्यथा उन्हें स्वीकार्य नहीं किया जाएगा।
- (ii) प्रत्येक प्रविष्टि के साथ पुस्तक की 05 प्रतियां भेजी जाएं। पुस्तकें वापिस नहीं की जाएंगी।
- (iii) प्रथम लेखक अपनी प्रविष्टियां दिनांक 31 मार्च, 2022 तक अवश्य भिजवा दें। इस तिथि के उपरांत प्राप्त होने वाली प्रविष्टियों पर कोई विचार नहीं किया जाएगा।

पुरस्कार संबंधी घोषणा

- (i) पुरस्कार संबंधी निर्णय की सूचना सभी पुरस्कार विजेताओं को पत्र द्वारा भेजी जाएगी तथा विभाग की वेबसाइट पर भी रखी जाएगी।
- (ii) पुरस्कार वितरण राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान द्वारा निर्धारित तिथि पर किया जाएगा।

सामान्य

- पुरस्कार के लिए पुस्तक के मूल्यांकन के बारे में कोई पत्र व्यवहार नहीं किया जाएगा।
- योजना के बारे में सूचना राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान की वेबसाइट www.nihroorkee.gov.in पर भी उपलब्ध है।
- इस योजना में पांडुलिपि (हस्तलिखित अथवा टंकित) पर विचार नहीं किया जाएगा। अतः प्रकाशित पुस्तकें ही विचारणीय होंगी।

प्रविष्टि भेजने का पता

निदेशक

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान

जलविज्ञान भवन, रुड़की-247 667

(उत्तराखंड)

हिंदी में तकनीकी पुस्तक लेखन पुरस्कार योजना-वर्ष 2020 एवं 2021

1. पुस्तक का नाम (हिंदी में)
(अंग्रेजी में)
2. पुस्तक का विषय : (क) (ख) (ग) (घ)
3. (i) लेखक/सह-लेखक का पूरा नाम (हिंदी में)
(अंग्रेजी में)
- (ii) पूरा पता (पिन कोड सहित)
- (iii) दूरभाष फैक्स सं.
- (iv) मोबाइल फोन नं.
- (v) ई-मेल
4. (i) प्रकाशक का नाम
- (ii) प्रकाशक का पूरा पता
- (iii) प्रकाशन का वर्ष
5. क्या पुस्तक को पूर्व में किसी सरकारी संगठन से पुरस्कार प्राप्त हुआ है: हां/नहीं
6. (क) आधार नं.
- (ख) आधार कार्ड से जुड़े बैंक खाते संबंधी निम्न विवरण अनिवार्य रूप से दें:-
(खाता सं. प्रथम लेखक का ही होना चाहिए)
(i) बैंक शाखा का पता
- (ii) बैंक खात सं.
- (iii) आई.एफ.एस. कोड
7. मैं यह प्रमाणित करता/करती हूँ कि
(i) मैंपुत्र/पुत्री.....भारतीय नागरिक हूँ।
(ii) पुस्तक मेरे द्वारा मूल रूप से लिखी/अनूदित की गई है।
(iii) मेरी पुस्तक को इस योजना के अंतर्गत प्रविष्टि करने से किसी अन्य व्यक्ति के कॉपी राइट का उल्लंघन नहीं होता है और पुस्तक में दिए गए आंकड़ों एवं तथ्यों के लिए मैं स्वयं उत्तरदायी हूँ।

मैं वचन देता/देती हूँ कि मैं हिंदी में तकनीकी पुस्तक लेखन पुरस्कार योजना विनियम के उपबंधों का पालन करूंगा/करूंगी।

लेखक/सह-लेखक के हस्ताक्षर

स्थान :

दिनांक :

संपर्क करें:

पवन कुमार

परामर्शदाता, तकनीकी पत्रिका जल चेतना

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान रुड़की।